



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 236]

नई दिल्ली बृहस्पतिवार जून 9, 1977/ज्येष्ठ 19, 1899

No. 236]

NEW DELHI, THURSDAY, JUNE 9, 1977/JYAISTHA 19, 1899

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 9th June 1977

S O. 389(E).—Whereas the Central Government is of opinion that it is necessary to appoint a Commission of Inquiry for the purpose of making an inquiry into a definite matter of public importance, namely, the need to ascertain whether there was, on the part of any public servant or person in authority,—

- (i) any deviation from any rule or established procedure or
- (ii) any suppression of, or omission to verify, any relevant fact or circumstance,

in relation to, or connected with, the chain of events commencing with the taking out of a sum of rupees sixty lakhs from the State Bank of India, Parliament Street, New Delhi, on May 24, 1971, by Shri Ved Prakash Malhotra, the then Chief Cashier of the said branch of the State Bank of India, including the subsequent criminal proceedings against Shri R S Nagarwala, son of late Shri S Nagarwala, and his death;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 3 of the Commissions of Inquiry Act, 1952 (60 of 1952), the Central Government hereby appoints a Commission of Inquiry consisting of a single-Member, namely, Shri Jagan Mohan Reddy, a retired Judge of the Supreme Court of India.

2. The terms of reference of the Commission shall be as follows.—

- (a) to examine and evaluate the evidence which has already been obtained, or may be obtained by the Commission or may be produced before it with regard to the matters mentioned in the Annexure to this notification,
- (b) to make such further inquiry as the Commission may consider desirable in order to obtain, to the extent possible, a full picture of all the facts and circumstances relating to the matters referred to in the Annexure, and
- (c) to inquire into any other matter which arises from, or is connected with or incidental to any act, omission or transaction referred to in the Annexure aforesaid

3 The headquarters of the Commission shall be at Delhi.

4. The Commission will complete its inquiry and report to the Central Government on or before the 31st day of December, 1977; and may also submit such interim report or reports concerning such matter or matters, referred to in the Annexure, as it may think fit

5 And whereas the Central Government is of opinion, having regard to the nature of the inquiry to be made and other circumstances of the case, that all the provisions of sub-section (2), sub-section (3), sub-section (4) and sub-section (5) of section 5 of the Commissions of Inquiry Act, 1952 (60 of 1952), should be made applicable to the Commission, the Central Government hereby directs, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the said section 5, that all the provisions of the said sub-sections (2), (3), (4) and (5) of that section shall apply to the Commission.

ANNEXURE

1 The taking out of the sum of Rs 60 lakhs from the State Bank of India, Parliament Street, New Delhi, on May 24, 1971, by Shri Ved Prakash Malhotra, the then Chief Cashier of the said Branch of the State Bank of India, the manner and the circumstances of taking out of the said sum, the source and ownership of the said sum, the accounts, if any, from which the said sum was taken out, the manner in which the said sum was accounted for in the books of the said Branch of the State Bank of India prior to its taking out and also subsequent to its return to the said Branch of the State Bank of India

2. The transfer of the aforesaid sum by the said Shri Ved Prakash Malhotra to another person alleged to be one Shri R S Nagarwala son of late Shri S. Nagarwala

3. The filing of a complaint with the Parliament Street Police Station, New Delhi, by the Officers of the said Branch of the State Bank of India relating to the taking out of the said sum and the investigation of the case by the Police authorities

4 The arrest of the said Shri Nagarwala, the recovery of the whole or part of the said sum from him and the subsequent criminal proceedings against him

5 The involvement, if any, of other persons with the said Shri Malhotra or Shri Nagarwala in any of the aforesaid transactions

6 The death of Shri Nagarwala during the pendency of the criminal proceedings against him

7 The death of the investigating officer, Shri D K Kashyap

[No VI/11034/8/77-S&P(DI)]

MAHESHWAR PRASAD, Addl. Secy

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 9 जून, 1977

का० आ० 389 (अ).—केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि सार्वजनिक महत्व के एक विशेष मामले की जांच करने के प्रयोजनों के लिए एक जांच आयोग नियुक्त करना आवश्यक है, अर्थात् यह जांच करने के लिए कि भारतीय स्टेट बैंक, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली से भारतीय स्टेट बैंक की उक्त शाखा के मुख्य खजांची श्री वेद प्रकाश मल्होत्रा द्वारा 24 मई, 1971 को साठ लाख रुपए की राशि निकाले जाने से प्रारंभ होने वाली घटना से, जिसके अन्तर्गत श्री आर० एस० नागरवाला मुपुत्र स्वर्गीय श्री एस० नागरवाला के विरुद्ध दण्डिक कार्यवाहिया और उसके पश्चात् उसकी मृत्यु की घटना भी है, सुसंगत या उसके सम्बन्ध में किसी लोक सेवक या प्राधिकारवान किसी व्यक्ति की ओर से—

- (i) किसी नियम या स्थापित प्रक्रिया से कोई विचलन किया गया था, या
- (ii) किसी सुसंगत तथ्य या परिस्थिति को छिपाया गया था या उसकी जांच करने में लोप किया गया था,

अतः जांच आयोग अधिनियम, 1952 (1952 का 60) की धारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार, इस अधिसूचना द्वारा जांच आयोग नियुक्त करती है जिसमें एक सदस्य होंगे, अर्थात् श्री पी० जगन मोहन रेड्डी, जो भारत के उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश हैं।

2. आयोग के निर्देश के निबन्धन निम्नलिखित होंगे, अर्थात् :—

(क) इस अधिसूचना के उपबन्ध में वर्णित मामलों के सम्बन्ध में उस साक्ष्य की परीक्षा और मूल्यांकन करना जो पहले ही प्राप्त किया जा चुका हो या आयोग द्वारा प्राप्त किया जाए, या उसके समक्ष पेश किया जाए,

(ख) उपबन्ध में निर्दिष्ट मामलों के सम्बन्ध में सभी तथ्यों और परिस्थितियों का पूरा विवरण, जहां तक सम्भव हो, प्राप्त करने के लिए ऐसी अतिरिक्त जांच करना जो आयोग वाछनीय समझे; और

(ग) किन्हीं ऐसे अन्य मामलों की जांच करना जो उपर्युक्त उपबन्ध में निर्दिष्ट किसी अन्य कार्य, लोप या सख्यवहारा से उत्पन्न होता है या उससे संबंधित या उसके आनुपंगिक है।

3. आयोग का मुख्यालय नई दिल्ली में होगा।

4. आयोग अपनी जांच पूरी कर के 31 दिसम्बर, 1971 को या उससे पहले केन्द्रीय सरकार को रिपोर्ट देगा और आयोग उपबन्ध में निर्दिष्ट ऐसे मामले या मामलों के सम्बन्ध में ऐसी अन्तरिम रिपोर्ट या रिपोर्टें दे सकेगा जो वह ठीक समझे।

5. आयोग द्वारा की जाने वाली जांच के स्वरूप और मामले की अन्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि जांच आयोग अधिनियम, 1952 (1952 का 60) की धारा 5 की उपधारा (2), उपधारा (3), उपधारा (4) और उपधारा (5) के सब उपबन्ध आयोग को लागू किए जाने चाहिए। अतः केन्द्रीय सरकार धारा 5 की उपधारा (1) द्वारा दी गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए इसके द्वारा यह निदेश देती है कि उक्त धारा की उपधारा (2), उपधारा (3), उपधारा (4) और उपधारा (5) के सब उपबन्ध आयोग को लागू होंगे।

उपाबन्ध

1. भारतीय स्टेट बैंक, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली से भारतीय स्टेट बैंक की उक्त शाखा के तत्कालीन मुख्य खजांची श्री वेद प्रकाश मल्होत्रा द्वारा 24 मई, 1971 को साठ लाख रुपए की राशि का निकाला जाना, उक्त राशि के निकाले जाने की रीति और परिस्थितिया, उक्त राशि के स्रोत और उसका स्वामित्व, यदि ऐसा कोई खाता है जिसमें से वह राशि निकाली गई है, वह रीति जिससे उक्त राशि निकाले जाने से पहले भारतीय स्टेट बैंक की उक्त शाखा की पुस्तकों में उक्त राशि हिसाब में दिखाई गई थी, और भारतीय स्टेट बैंक की उक्त शाखा में वह राशि वापस रखे जाने के पश्चात् हिसाब में ली गई थी ।
2. उक्त श्री वेद प्रकाश मल्होत्रा द्वारा अभिकथित श्री आर० एस० नागरवाला, सुपुत्र स्वर्गीय श्री एस० नागरवाला एक अन्य व्यक्ति को उक्त राशि का अन्तरण ।
3. उक्त राशि के निकाले जाने के सम्बन्ध में भारतीय स्टेट बैंक की उक्त शाखा के अधिकारियों द्वारा पार्लियामेंट स्ट्रीट पुलिस थाना, नई दिल्ली में परिवाद का फाइल किया जाना और पुलिस प्राधिकारी द्वारा मामले की जाच ।
4. उक्त श्री नागरवाला की गिरफ्तारी, उससे उक्त सम्पूर्ण राशि या उसके किसी भाग का वसूल किया जाना और उसके पश्चात् उसके विरुद्ध दांडिक कार्यवाहिया ।
5. उपर्युक्त किसी सव्यवहार में उक्त श्री मल्होत्रा या श्री नागरवाला के साथ किसी अन्य व्यक्ति का, यदि कोई हो, सहयुक्त होना ।
6. श्री नागरवाला के विरुद्ध दाण्डिक कार्यवाहियों के लम्बित रहने के दौरान उसकी मृत्यु ।
7. जाच अधिकारी श्री डी० के० कश्यप की मृत्यु ।

[स० VI/11034/8/77-एस० एण्ड पी० (डी-I)]

महेश्वर प्रसाद, अपर सचिव ।

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मद्रासालय, मिनटो रोड, नई दिल्ली द्वारा
मुद्रित तथा नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 1977